Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

**Answer Script Details**
**Barcode** 5560269

**Roll No.** 24034000030
**Total Mark** 57/75.00

**Exam** MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
**Subject** A320702T - HISTORY OF MUSIC

**Question wise Mark Summary**

| Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark | Q.No | Mark |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1A | 5/5 | | | | | | |
| 1B | 2/5 | | | | | | |
| 1C | 5/5 | | | | | | |
| 1D | 1/5 | | | | | | |
| 1E | 4/5 | | | | | | |
| 1F | 5/5 | | | | | | |
| 1G | 4/5 | | | | | | |
| 1H | 4/5 | | | | | | |
| 1I | 3/5 | | | | | | |
| 2 | NA/15 | | | | | | |
| 3 | NA/15 | | | | | | |
| 4 | NA/15 | | | | | | |
| 5 | 12/15 | | | | | | |
| 6 | 12/15 | | | | | | |
| 7 | NA/15 | | | | | | |
| 8 | NA/15 | | | | | | |
| 9 | NA/15 | | | | | | |

# Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
# Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 18-12-24 Shift: 1 Room No.: 33
Paper Code: A320702T Subject: MUSIC VOCAL Year/Sem: 1(1)
Name of Candidate: ANUSHKA BAJPAI
Roll No.: 2 4 0 3 4 0 0 0 0 3 0

Signature of Candidate | Signature of Invigilator | COE Facsimile

PART-II

| MARKS OBTAINED | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Q. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| (a) | | | | | | | | | | |
| (b) | | | | | | | | | | |
| (c) | | | | | | | | | | |
| (d) | | | | | | | | | | |
| (e) | | | | | | | | | | |
| (f) | | | | | | | | | | |
| (g) | | | | | | | | | | |
| (h) | | | | | | | | | | |
| (i) | | | | | | | | | | |
| (j) | | | | | | | | | | |
| Total | | | | | | | | | | |

Total Marks in Figures — Max. Marks
Total Marks in Words

A320702T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: MUSIC VOCAL (M.A.)
Session: 2024-25 Year/Semester: I (1)
Subject Name: MUSIC VOCAL
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 3 2 0 7 0 2 T

Exam Date: 1 8 1 2 2 0 2 4

Name of Candidate: ANUSHKA BAJPAI

Father's Name: ANAND KR BAJPAI

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 1 5

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: K N 1 5

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व छात्र Ex Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
5560269

A320702T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 4 0 0 0 0 1 3 9 4 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 3 4 0 0 0 0 3 0

प्रश्न पत्र कोड Paper Code: A 3 2 0 7 0 2 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थियों को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पत्र के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. अंकित में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ काले पेन से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बालपेन से भरा जायें।

## INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

## INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

| Correct Method | Incorrect Method |
|---|---|
| ① ● ③ ④ | ✓ ✗ ◉ ⊘ |

4. Make no Stray marks on this sheet.

**5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

## IN ORDER TO AVOD UFM ( UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

## अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्दिष्ट स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाइल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

### परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ ( 1-24) से कम है या फटे हुए है, तो प शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसको परी होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

## INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages ( 1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, S Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES o commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that n corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in st as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

## INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

| | 1 | 8 | 1 | 5 | 4 | 3 | 2 | 1 | 6 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| 1 | ● | 1 | ● | 1 | 1 | 1 | 1 | ● | 1 | 1 |
| 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | 2 | ● | 2 | 2 | 2 |
| 3 | 3 | 3 | 3 | 3 | 3 | ● | 3 | 3 | 3 | 3 |
| 4 | 4 | 4 | 4 | 4 | ● | 4 | 4 | 4 | 4 | 4 |
| 5 | 5 | 5 | 5 | ● | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 | 5 |
| 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | 6 | ● | 6 |
| 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 | 7 |
| 8 | 8 | ● | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 | 8 |
| 9 | 9 | 9 | 9 | 9 | 9 | 9 | 9 | 9 | 9 | ● |

**Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .**

Paper Code

| A | 3 | 2 | 0 | 7 | 0 | 2 | T |
|---|---|---|---|---|---|---|---|



Section-A

1. A. "उदात्त"

"सामवेद" जो चार वेदों में से एक है तथा जिसे "संगीत का वेद" कहते हैं इसमें तीन प्रकार के स्वरों का वर्ण मिलता है - उदात्त, अनुदात्त आदि।

सामवेद में गायन की एक विधि बताई गई है तथा मंत्रों का उच्चारण करने हेतु इन्हीं तीन साम स्वरों का वर्णन किया गया है।

सबसे पहले "नि" इसके उपरान्त अन्य स्वरों की उदात्त स्वर की संज्ञा दी गई।

मंत्रों का उच्चारण व साम गायन इन्हीं स्वरों के अनुसार व दायरे में किया जाता है / था।

सामवेद के इस स्वर 'उदात्त' का वर्णन अन्य ग्रन्थों जैसे — उपनिषद, नाट्यशास्त्र आदि में भी मिलता है।

B. मध्यकाल के दो ग्रन्थ:

त्रिपिटक → यह एक बौद्ध ग्रन्थ है जिसमे बुद्ध के जीवन / संघ संबंधी व अर्हत संबंधी विवरण मिलते हैं।

आरण्यक → ~~जिनमें~~ ~~[illegible]~~ जिसमें मुनियों के अरण्य विचरण के किस्से वर्णित हैं।

Do Not Write anything in this Portion

c. "संगीत रत्नाकर"

"शारंगदेव" कृत संगीत रत्नाकर में कुल 7 (सात) अध्याय हैं जिसके कारण इसे "सप्ताध्यायी" भी कहा जाता है।

इस ग्रन्थ की रचना 6/8वीं (मतभेद) में की गई थी तथा यह उत्तरी तथा दक्षिणी भारत का एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है।

संगीत रत्नाकर के 7 अध्याय:

1) स्वराध्याय जिसमें नाद, स्वर, जाति आदि का वर्णन है।

2) राग विवेकाध्याय जिसमें ग्राम रागों, देशी रागों आदि का वर्णन है।

3) प्रकीर्णाध्याय जिसमें वाग्गेयकार के 28 लक्षणों आदि का वर्णन है।

4) प्रबन्धाध्याय जिसमें प्रबन्ध, प्रकार आदि का वर्णन है।

5) तालाध्याय जिसमें तालों का वर्णन है।

6) वाद्याध्याय जिसमें वाद्य तथा उनके 4 प्रकार — तत, घन, सुषिर, अवनद्ध का वर्णन है।

7) नर्तनाध्याय जिसमें नृत्य व उसके प्रकार आदि

Paper Code

3

का वर्णन है।

D) प्राचीनकाल की दो वीणाएँ :-

- श्रुति वीणा (जिसका उपयोग शारंगदेव जी ने सारणा चतुष्टई में किया था तथा 22 तार बाँधे थे।)
- स्वर वीणा (जिसका उपयोग ... ने सारणा चतुष्टई में किया था तथा 7 तार बाँधे थे।)

E) वेद

वेदों की संख्या 4 है।

1) ऋगुवेद
2) यजुर्वेद
3) अथर्ववेद
4) सामवेद

विश्व के विद्वानों व अत्यंत रिसर्च यह मानते हैं कि वेदों में संसार का सारा ज्ञान भरा हुआ है।

चारों वेदों में ही संगीत के विषय में थोड़ा-बहुत वर्णन मिलता है किन्तु 'सामवेद' को स्वयं 'संगीत का वेद' कहा जाता है क्योंकि उसमे संगीत संबंधि जानकारी, संगीत गान की विधि व नियम, स्वरो आदि का वर्णन मिलता है। गायन के भाग → हुंकार, निधन, आदि का वर्णन भी साम वेद में मिलता है।

इसके उपरान्त :-

ऋगवेद में ऋचाओं को स्वरावलियों से बद्ध 'स्तोत्र' व अर्वतन पूर्वक स्तोत्र गान को '...' कहते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



यजुर्वेद में यज्ञों के समय मंत्रोच्चारण की स्वरबद्ध गायन की विधि का विवरण मिलता है।

अथर्ववेद मनोरंजन व सुखमय कार्यों का वर्णन करता है जिसमे गाथा गायन व दुन्दुभी जैसे वाद्यों का वर्णन भी मिलता है।

F) तंत्र वाद्य

तंत्र वाद्य 'संगीत रत्नाकर' व अन्य ग्रन्थों में वर्णित वाद्यों के चार (४) प्रकारों में से एक है।

तंत्र वाद्य अर्थात ऐसे वाद्य जिनमें तारों को स्पर्श कर, तार की झंकार से स्वर उत्पन्न किए जाते हैं।

ऐसा एक तंत्र वाद्य है 'तानपुरा' जिसमें चार (४) तार होते हैं जिन्हें स, प/म, स/नि स्वरों पर मिलाया जाता है।

तानपुरे से उत्पन्न होने वाली ध्वनि अत्यधिक मधुर होती है तथा गायक / वादक के लिए सहायक होती है। इन्हीं स्वरों के आधार पर गायक का गीत व वादक का वाद्य मिला होता है तथा कर्णप्रिय सुनाई देता है।

तानपुरा एक सहायक वाद्य है किन्तु इसकी ध्वनि ध्यान, पूजा, म्यूज़िक थेरापि आदि के लिए अकेले ही पर्याप्त होती है।

तानपुरे में एक तुंबा होता है जिसे कुम्हड़े

Paper Code

5

आदि से बनाया जाता है। यह मस्तिष्क कोमल होता है ज्यादा प्रहार करने से ... सकता है व स्वर पर प्रभाव पड़ता है।

ऊपर की ओर, नीचे तुंबे के हिस्से से बंधे तार, खूंटियों से बंधे होते हैं जिन्हें घुमाकर हम तारों को स्वरों से मिला सकते हैं।

5) संगीत चिकित्सा दिवस को मनाया जाता है। इसे मनाने का कारण संगीत की चिकित्सा के क्षेत्र में प्रयोग करने वाले लोगों (प्रोफेशनल्स) को प्रोत्साहित करने के लिए है।

संगीत चिकित्सा आज एक विषय बन चुका है जिसकी डिग्री लेकर लोग दूसरों की संगीत के माध्यम से, डिप्रेशन, ऐंजाइटी, अल्जाइमर्स, schizophrenia, कैंसर आदि जैसी बीमारियों से लड़ने में करते हैं।

संगीत नवजात शिशुओं को भी मदद करने में कारगर माना गया है जो वेंटीलेटर में सांस लेने में समस्या महसूस करते हैं।

NICE (National Institute ... health care and excellence) जैसे संस्थान संगीत चिकित्सा को आधुनिक जगत की एक महत्वपूर्ण, कार्यरत व उपयोगी खोज मानते हैं।

अमेरिका, चीन, भारत, जर्मनी आदि जैसे देश संगीत चिकित्सा के उपयोग व उसे बढ़ाने में कार्यरत हैं।

H) भरतकृत 'नाट्यशास्त्र'

२००-४०० ई॰ पूर्व कृत 'नाट्यशास्त्र' एक अद्भुत/पहला ग्रन्थ है जिसमें गायन वादन व नृत्य का समन्वय है। इसे भरत मुनि ने ब्रह्मा के निर्देश पर बनाया ऐसा माना जाता है। ब्रह्मा जी ने नाट्य वेद की रचना कर नाट्य ज्ञान भरत को देकर उसे प्रयोग करने का निर्देश दिया।

इस शास्त्र में ३६ अध्याय हैं जिनमें से २८-३३ अध्याय संगीत के प्रति समर्पित हैं।

| २८ अध्याय | में स्वर, जाति, ग्राम, मूर्च्छना आदि का वर्णन मिलता है।

| २९ अध्याय | में वीणा व उसके प्रकारों का वर्णन।

| ३० अध्याय | में सुषिर वाद्यों का वर्णन

| ३१ अध्याय | में ताल का वर्णन

| ३२ अध्याय | में गायक के गुण-दोष आदि का वर्णन

| ३३ अध्याय | में अवनद्ध वाद्यों आदि का वर्णन मिलता है।

Paper Code



1) उपशास्त्रीय संगीत की एक विधा : संगीत की

उपशास्त्रीय संगीत से तात्पर्य ऐसी विधाओं से होता है जिनमें शास्त्रीय संगीत के शास्त्र / साहित्य व मूल्यों का उपयोग हो किन्तु उसके कुछ नियमों पर कुछ छूट भी हो।

उपशास्त्रीय संगीत की एक ऐसी विधा का नाम 'चतुरंग' है।

चतुरंग अर्थात चार रंग एक ऐसी विधा है जिसमें 1) गीत के बोल 2) तबला / मृदंग के बोल 3) स्वर 4) तराने के बोल, इन चार चीजों का समावेश होता है।

इसे पंजाबी, अद्धा आदि जैसी शास्त्रीय गायन में कुछ अप्रचलित तालों में ज्यादातर गाया बजाया जाता है।

इसको सुनकर भजन के समान सुख की प्राप्ति भी होती है तथा गायक के शास्त्रीय गुणों का भी पता चलता है।

चतुरंग ज्यादातर राधा-कृष्ण की लीला, होली, कृष्ण-गोपी लीला आदि पर रचे जाते हैं।

चतुरंग अत्यधिक कर्णप्रिय, मधुर साथ ही साथ कठिन भी होते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



Section - B

5. भरत का सांगीतिक योगदान

'भरत' जिन्हें ब्रह्मा का शिष्य माना जाता है, उनका काल ४०० ई॰ पूर्व से १०० ई॰ पूर्व तक माना जाता है।
कहते हैं ब्रह्मा ने 'नाट्य - वेद' की रचना कर भरत को नाट्य - शिक्षा देकर उसका प्रयोग करने का निर्देश दिया जिसके बाद उन्होंने 'नाट्यशास्त्र' नामक ग्रन्थ की रचना की।

भागवत व विष्णुपुराण के अनुसार :
भरत मनुवंशीय राजा ऋषभदेव के पुत्र थे।
यह वैशाली पहुलाश्रम से दक्षिण की ओर चले गए थे जिसके कारण आज भी दक्षिण (कर्नाटक) में नृत्य को 'भरतनाट्यम' नाम से जाना जाता है।

भरत ने (२००-४००) ई० पूर्व नाट्यशास्त्र की रचना करी जिसमें गायन, वादन, नृत्य तीनों विधाओं का प्रौढ़ वर्णन है।

इसके ३६ अध्यायों में से आखिरी (२८-३३) अध्यायों में सांगीतिक शास्त्र का वर्णन है।
इस ग्रन्थ में लिखी बातें आज तक मानी जाती हैं जो यह बताता है कि किस प्रकार संगीत उस वक्त महत्वपूर्ण था तथा उसका नाट्य से घनिष्ट संबंध था तथा किस प्रकार आज भी १५०० साल बाद यह ग्रन्थ संगीत का आधार है।

नाट्यशास्त्र के छः (6) सांगीतिक अध्याय :-

28 अध्याय में स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, जाति, श्रुति, जाति के 10 लक्षण — न्यास, अंश, अपन्यास, मंद्र, तार, अल्पत्व, बहुत्व, औडत्व, षाडत्व आदि, वर्ण आदि के विषय में वर्णन किया।

भरत के 7 शुद्ध स्वर व 22 श्रुतियाँ थीं।
प्रत्येक स्वर की अंतिम श्रुति पर गाया तथा स्वर 2 विकृत स्वर (काकली निषाद और अन्तर गन्धार) कुछ इस प्रकार आए :-

स्वर → श्रुति → 4, 3, 2, 4, 4, 3, 2

2 पर काकलि निषाद, 4 पर षड्ज, 7 - रिषभ, 9 - गंधार, 11 - अन्तर गंधार, 13 - मध्यम, 17 - पंचम, 20 → धैवत, 22 - निषाद.

भरत की जातियाँ 18 थीं.

षड्ज ग्राम (7) — मध्यम ग्राम (11).

इन दोनों ग्रामों की मिली हुई 7 शुद्ध व 11 विकृत जातियाँ।

भरत ने संवाद पर बल दिया → 9/13 → समवादी
→ 2 श्रुतिअंतर पर विवादी स्वर.

भरत ने नाट्यशास्त्र में षड्ज व मध्यम ग्रामों का विस्तारपूर्वक वर्णन दिया किन्तु गन्धार ग्राम

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code



को छोड़ दिया, बोला वो गन्धर्वों के साथ उनके लोक चला गया।

भरत ने स्वर वीणा पर ... के साथ सारणा चतुष्टय कर अ...क्त स्वर व श्रुतियों का विवरण दिया।

29 अध्याय में वीणा व उसके प्रकारों का वर्णन भरत ने किया।

30 अध्याय में सुषिर वाद्यों का विवरण किया।

31 अध्याय में कुछ तालों का विवरण किया।

32 अध्याय में गान / गायक के गुण / दोष का विवरण किया।

33 अध्याय में अवनद्ध वाद्यों का वर्णन किया

भरत का सांगीतिक ... अतुलनीय व उनका संगीत जगत में ...न अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ आगे चलकर अन्य कई ग्रन्थकारों जैसे मतंग, शारंगदेव, दत्तिल आदि के लिए प्रेरणा व संगीत का आधार बना।

Paper Code

11

Section-c

6. महाभारत कालीन संगीत |

महाभारत के काल को लेकर विद्वानों के मध्य कुछ मतभेद होने के कारण कुछ 5000 वर्ष पूर्व माना जाता है |

महाभारत काल में अनेक विद्वान हुए किन्तु महाभारत जैसे विशाल युद्ध के कारण उस काल की कलाकौशल की चर्चा कुछ कम होती है |

महाभारत में स्वयं कुछ राग, आलाप, तान, ग्राम, स्वर आदि की चर्चा मिलती है तथा दुन्दुभी, झर्झरी, मृदंग, पटह आदि जैसे वाद्यो के नाम मिलते हैं |

अज्ञातवास के समय स्वयं अर्जुन ने बृहन्नला का रूप लेकर राजा की पुत्री को संगीत की शिक्षा दी थी |

महाभारत में राजा के दरबा[illegible]ोत्सव, उत्सव, पर्व आदि के कार्यों में उपलब्ध [illegible] गीतों व गान का वर्णन मिलता है |

महाभारत में संगीत के लिए → गान्धर्व व युद्ध संगीत के लिए युद्ध गान्धर्व की संज्ञा मिलती है |

महाभारत ग्रन्थ में युद्ध के समय शंख नाद व बड़े-बड़े बिगुलो से युद्ध आरंभ व समाप्त किया जाता था |

संगीत में गायन - वादन - तथा नृत्य तीनों ही

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

एवं वर्णन
का समावेश महाभारत काल में पाया जाता है।

इन सभी के उपरान्त, महाभारत काल के सर्वश्रेष्ठ स्वयं हरी नारायण के अवतार श्री कृष्ण समकालीन धरती पर अवतरित थे।

श्रीकृष्ण 16 कलाओं के ज्ञाता एवं संगीत के महान विद्वान थे। 'बाँसुरी' जैसा मधुर वाद्य उनका अभिन्न अंग समान था। उनकी बाँसुरी से निकला संगीत न सिर्फ मनुष्यों की अपितु स्वयं प्रकृति को मंत्र मुग्ध व कभी झूमने पर विवश कर देता था।

श्री कृष्ण का गीता उपदेश आज भागवत के रूप में गाया जाता है।

श्री कृष्ण की यमुना नाग (शेष नाग) के फन पर नृत्य व उसके संहार की गाथा भी उनके एक अत्यन्त अच्छे नृतक होने का परिचायक है।

महाभारत काल में युधिष्ठिर जैसे ज्ञानी राजा ने भी संगीत का सम्मान किया व इस काल में संगीत ने प्रगतिशील उद्भव देखा।

Paper Code

Paper Code

14

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

17

Paper Code



Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

19

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

24